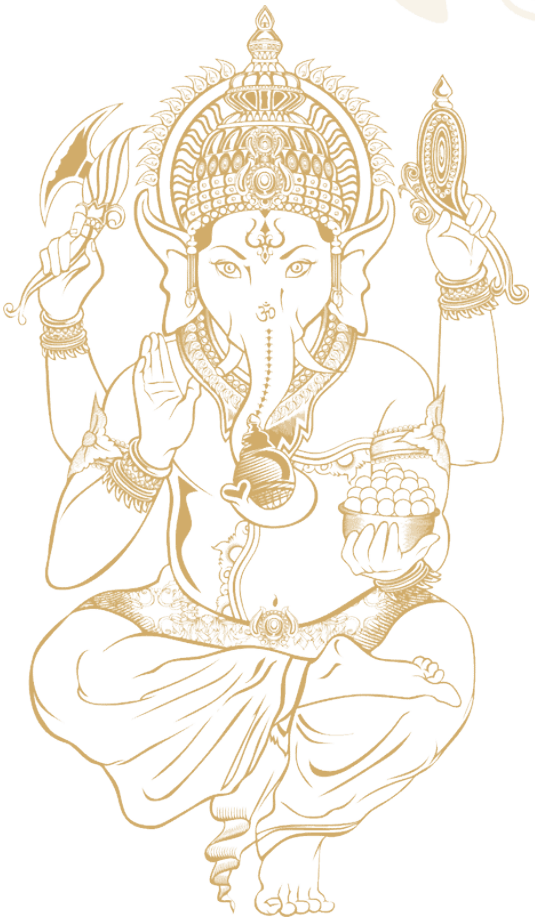

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121340601 Date: 20/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
10-11/04/1999	जन्म तिथि	07/02/2003
शनि-रविवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 06:00:00	जन्म समय	18:05:00 घंटे
घटी 59:54:28	जन्म समय(घटी)	27:09:53 घटी
India	देश	India
Hamirpur	स्थान	Hamirpur
31:38:00 उत्तर	अक्षांश	31:38:00 उत्तर
76:36:00 पूर्व	रेखांश	76:36:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:36	स्थानिक संस्कार	-00:23:36 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:02:12	सूर्योदय	07:13:02
18:49:09	सूर्यास्त	18:02:46
23:50:37	चित्रपक्षीय अयनांश	23:53:47

मीन	लग्न	कर्क
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	चन्द्र
मकर	राशि	मेष
शनि	राशि-स्वामी	मंगल
श्रवण	नक्षत्र	अश्विनी
चन्द्र	नक्षत्र स्वामी	केतु
3	चरण	2
साध्य	योग	शुभ
वणिज	करण	तैतिल
खे-खेमचन्द	जन्म नामाक्षर	चे-चेतना
मेष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
वैश्य	वर्ण	क्षत्रिय
जलचर	वश्य	चतुष्पाद
वानर	योनि	अश्व
देव	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	आद्य
मार्जार	वर्ग	सिंह

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
चन्द्र 3वर्ष 3मा 4दि		25:06:51	मीन	लग्न	कर्क	25:42:55	केतु 5वर्ष 2मा 9दि	
राहु		26:50:29	मीन	सूर्य	मक	24:25:11	शुक्र	
15/07/2009		18:59:06	मक	चंद्र	मेष	03:26:32	18/04/2008	
15/07/2027		14:55:16	तुला व	मंगल	वृश्चि	19:51:06	18/04/2028	
राहु	27/03/2012	00:08:31	मीन	बुध	धनु	29:19:03	शुक्र	18/08/2011
गुरु	20/08/2014	19:35:26	मीन	गुरु व	कर्क	18:31:17	सूर्य	18/08/2012
शनि	26/06/2017	04:21:15	वृष	शुक्र	धनु	09:27:21	चन्द्र	18/04/2014
बुध	14/01/2020	10:49:15	मेष	शनि व	वृष	28:26:35	मंगल	19/06/2015
केतु	31/01/2021	26:23:18	कर्क	राहु व	वृष	11:36:08	राहु	18/06/2018
शुक्र	01/02/2024	26:23:18	मक	केतु व	वृश्चि	11:36:08	गुरु	16/02/2021
सूर्य	26/12/2024	22:16:18	मक	हर्ष	कुंभ	04:18:51	शनि	18/04/2024
चन्द्र	27/06/2026	10:20:26	मक	नेप	मक	17:03:11	बुध	17/02/2027
मंगल	15/07/2027	16:26:12	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	25:31:49	केतु	18/04/2028

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:50:37 चित्रपक्षीय अयनांश 23:53:47

लग्न-चलित

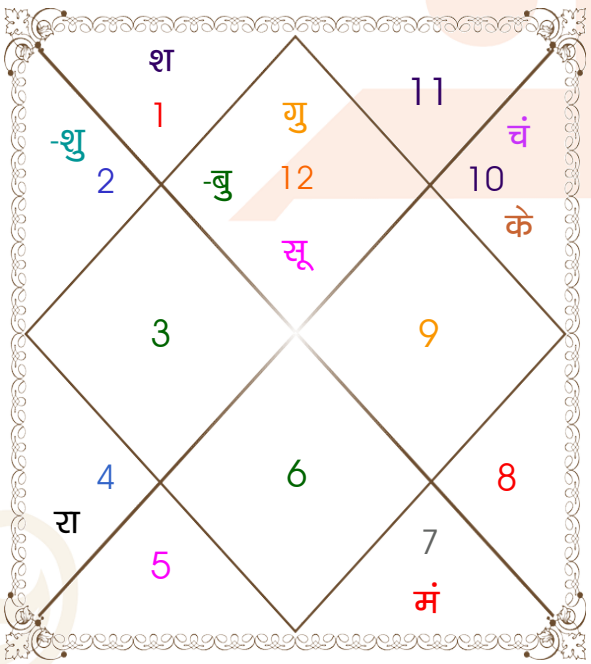

लग्न-चलित

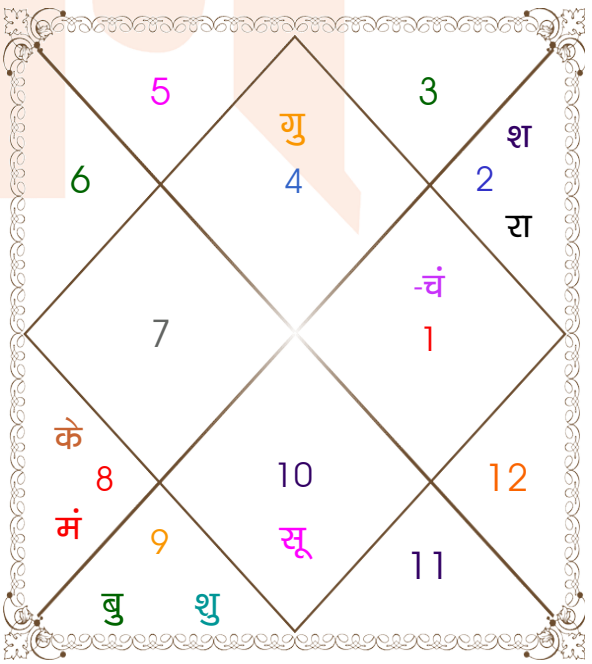

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	अश्व	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	मंगल	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	मेष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.00		

कुल : **26 / 36**

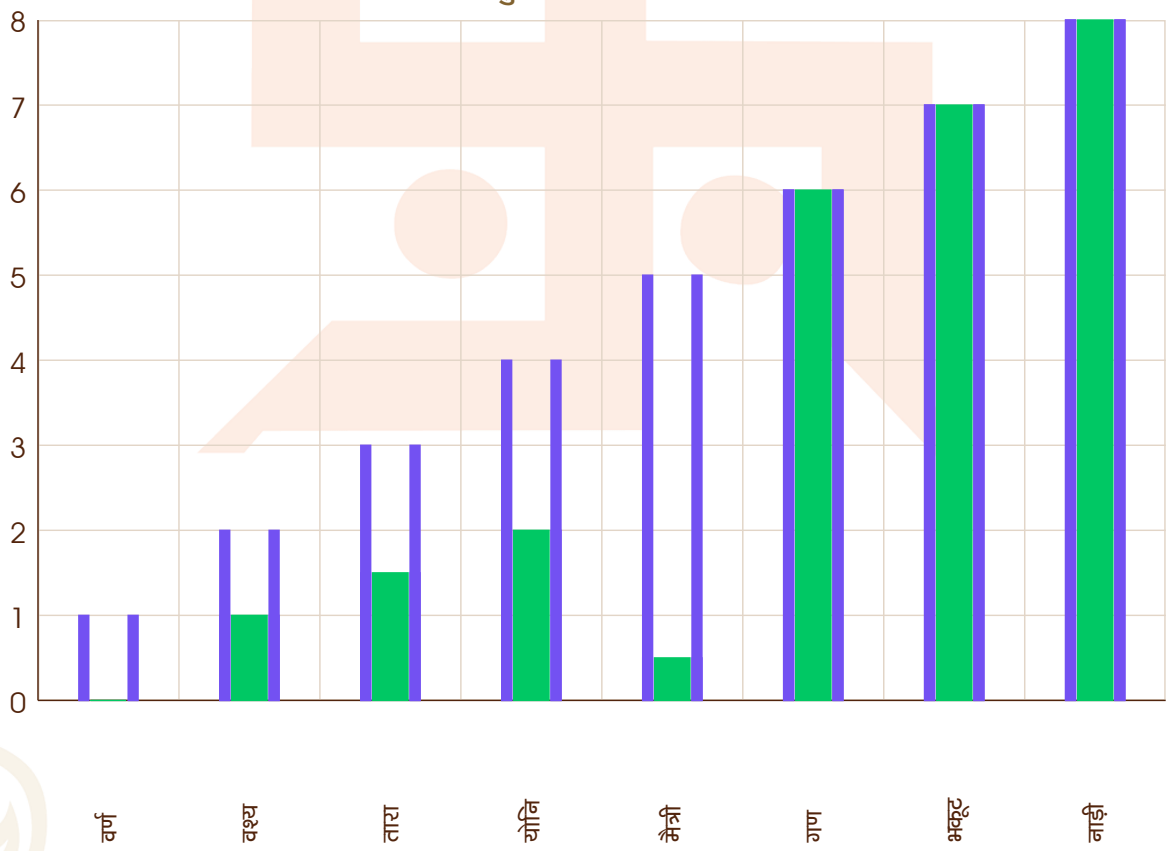

अष्टकूट मिलान

। का वर्ग मार्जार है तथा । का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर ।म है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार । और । का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

। मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

। मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में। एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष ।माप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु । कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

। तथा । में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

। का वर्ण वैश्य है तथा । का वर्ण क्षत्रिय हैं। क्योंकि । का वर्ण । के वर्ण ो ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। इसके फलस्वरूप । अति वर्चस्वशाली, आक्रामक, झगड़ालू प्रवृत्ति की होगी एवं देखभाल नहीं करने वाली होगी।। को हमेशा यह घमंड एवं अहंकार होता रहेगा कि वह अपने पति ो श्रेष्ठ है तथा हमेशा अपने पति एवं पति के परिवार के ।दस्यों को नीची निगाह ो देखने वाली होगी।

वश्य

। का वश्य जलचर है एवं । का वश्य चतुष्पद है। अतः यह मिलान औसत मिलान ही है। जलचर एवं चतुष्पद ।मान्यतः एक-दूसरे के लिए ।म हैं। दोनों के बीच न ही प्रेम की भावना होगी और न ही शत्रुता तथा दोनों का प्रकृति में स्वतंत्र अस्तित्व रहेगा। कुंडली मिलान में दोनों के दृष्टिकोण, ।च एवं व्यवहार में पूर्णतः भिन्नता रहते हुए भी विवाह को स्वीकृति प्रदान की गयी है क्योंकि दोनों एक-दूसरे को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचायेंगे तथा अपने-अपने तरीके ो अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे।

तारा

। की तारा क्षेम तथा । की तारा वध है।। की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह। एवं । दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल ।कता है।। अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली ।बित हो ।कती है। अतः ।भव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो ।कता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत ।कते हैं तथा ।फलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ ।कती है।

योनि

। की योनि वानर है तथा । की योनि अश्व है। अर्थात दोनों की योनि ।मान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात ।म ।बंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी ।मझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में ।हयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह ।कता है। ।थ ही दोनों के बीच अविश्वा। की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को ।देह की भावना ो देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी ।मझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो ।कते हैं। ।भव है कि दोनों के बीच अवैध ।बंध को लेकर ।देह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो ।कता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो ।कता है। वर या कन्या में ो कोई भी विश्वासघात भी कर ।कता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो ।कता है।

इनको अपने जीवन में अत्याधिक ।घर्ष के उपरांत ही ।फलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में ।फलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की ।भावना है। जिसके कारण दोनों को ।मय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के ्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमां। एवं ेक में रुचि की कमी भी रह ।कती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण ।मय-समय पर धन हानि भी हो ।कती है। आप। में प्रेम एवं ौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इ। प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न ।मान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में । का राशि स्वामी । के राशि स्वामी े शत्रु का ।बंध रखता है। जबकि । का राशि स्वामी । के राशि स्वामी के ।थ ।म रहता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार े खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि े यदि एक ।थी का राशि स्वामी दूसरे के लिए शत्रु किंतु दूसरा उसे ।म मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह ।कता है। ऐसा भी हो ।कता है कि यह बह। कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो ।कती है।

गण

। का गण देव तथा । का गण भी देव है। अर्थात दोनों का गण ।मान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश दोनों दयालु, ।ह्रदय, मृदु, ौम्य एवं ंवेदनशील स्वभाव के होंगे। ।थ ही दोनों एक-दूसरे के अति अनुकूल होंगे तथा एक-दूसरे का काफी ख्याल रखने वाले होंगे। ऐसी स्थिति में वैवाहिक ।बंध के उपरांत शांति, ुख, खुशहाली एवं ।मृद्धि हमेशा कदम चूमती रहेगी।

भकूट

। से । की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है तथा । से । की राशि दशम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण । परिश्रमी एवं अपने व्यवसाय में काफी अच्छे होंगे। अपने व्यवसाय में लगन, निष्ठा एवं मेहनत के कारण उन्हें ।भी े प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। दूसरी ओर । घरेलू होंगी। अपने आतिथ्य भाव एवं ।ब का ध्यान रखने तथा बड़ों को ।म्मान देने की प्रवृत्ति कारण परिवार के ।दस्यों की आंखों का तारा होंगी। पति-पत्नी के बीच असीम प्रेम, ।हयोग एवं ।मंजस्य बना रहेगा।

नाड़ी

। की नाड़ी अन्त्य है तथा । की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी ।मान नहीं

है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि। दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह मन्वय शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ को तुलित करता है।। की अन्त्य नाड़ी तथा । की आद्य नाड़ी होने के कारण उत्तम स्वास्थ्य, म्पत्ति, त्ता, शक्ति एवं दम्पत्ति के पारस्परिक प्रेम एवं हयोग मय-समय पर मिलता रहेगा। आपकी तान अति भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं शक्ति पन्न होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

। की राशि भूमितत्व युक्त मकर तथा । की राशि अग्नितत्व युक्त मेष है। भूमि एवं अग्नितत्व में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनके दाम्पत्य ।बध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा वैवाहिक जीवन में भी यदा कदा ।मस्याओं का ।मना करना पड़ेगा। अतः मिलान अच्छा नहीं रहेगा।

। की राशि का स्वामी शनि तथा । की राशि का स्वामी मंगल परस्पर ।म तथा शत्रु अतः । और । के परस्पर ।बधों में अनावश्यक मतभेद के कारण तनाव तथा कटुता का भाव विद्यमान होगा। यद्यपि । की प्रवृति इसमें उदासीन रहेगी लेकिन । द्वारा ।मस्याएं उत्पन्न होंगी तथा एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा भी कमियों पर विशेष ध्यान देने। विरोध के भाव में वृद्धि होगी तथा परिवार में अशांति का वातावरण बनेगा। अतः यदि । और । सामंजस्य की प्रवृति का अनुसरण करें तो वैवाहिक जीवन में ुख्द क्षणों की वे प्राप्ति करने में ।फल हो ।कते हैं।

। और । की राशियां परस्पर चतुर्थ एवं दशम भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव। उपरोक्त दुष्प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम ।हयोग तथा ।हानुभूति के भाव की उत्पति होगी तथा ुख दुख में एक दूसरे को ।हयोग प्रदान करने में प्रवृत होंगे। ।थ ही परस्पर आत्म ।मर्पण का भाव भी रहेगा जिससे दाम्पत्य ।बधों में मधुरता की वृद्धि होगी तथा वैवाहिक जीवन ुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

। का वश्य जलचर तथा । का वश्य चतुष्पद है। जलचर तथा चतुष्पद में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में भिन्नता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं अलग अलग रहेंगी। ।थ ही काम ।बधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा ।न्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे जिससे परेशानी उत्पन्न होने की ।भावना रहेगी।

। का वर्ण वैश्य तथा । का वर्ण क्षत्रिय है। अतः । की प्रवृति धनार्जन ।बधी कार्यो में होगी तथा धन को वे विशेष महत्व प्रदान करेंगे परन्तु । सामान्य रूप। पराक्रमी तथा ।हसी कार्यो को करने में ।फल होंगी। अतः यदा कदा परस्पर कार्य ।बधी मतभेद भी हो ।कते हैं।

धन

। और । दोनों की तारा परस्पर ।म है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा ।मान्य गति। धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी ।म ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम। प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इ। प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की ।भावना नहीं होगी परन्तु ।मान्य जीवन धनऐश्वर्य । युक्त

होकर व्यतीत होगा।

इसके ाथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप े न्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

। का अन्त्य तथा । का आद्य नाड़ी में जन्म हुआ है अतः दोनों की नाड़ियां भिन्न होने के कारण नाड़ी दोष के प्रभाव े ये मुक्त रहेंगे जिससे इनका शारीरिक स्वास्थ्य ामान्यतया अच्छा ही रहेगा। लेकिन मंगल का । के स्वास्थ्य पर अशुभ प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव े वह रक्त या पित विकार े परेशान होंगी तथा यदा कदा हृदय ंबंधी कष्ट की भी ंभावना रहेगी। ाथ ही गुप्त रोग एवं काम क्रिया में उदासनीनता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इससे पति पत्नी के आपसी ंबंधों में तनाव उत्पन्न होगा जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता में अल्पता आएगी। अतः मंगल के प्रभाव को कम करने के लिए । को चाहिए कि वह नियमित रूप े हनुमानजी की पूजा करें तथा मंगलवार के उपवा भी रखें।

संतान

यथोचित मय में ंतति प्राप्ति के लिए । और । का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव े उनको उचित मय पर ंतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार े अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। ाथ ही बच्चों के जन्म के मध्य भी उचित अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित रूप े करने में मर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त । और । के कन्या तथा पुत्र ंततियों की ंख्या मान रहेगी।

। का प्रसव ामान्य रूप े नहीं होगा तथा इसमें उन्हें किसी भी प्रकार े परेशानी या मस्याओं का ामना करना पड़ेगा। यह मस्या गर्भपात के रूप में भी हो कती है। अतः उन्हें गर्भावस्था के मध्य अपना डाक्टरी परीक्षण नियमित रूप े करवाते रहना चाहिए। इ प्रकार वह ुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देंगी तथा स्वयं भी स्वस्थ एवं शांति की अनुभूति करेंगी।

। और । को बच्चों की ओर े पूर्ण न्तुष्टि प्राप्त होगी तथा बच्चे भी अपने क्षेत्र में स्व बुद्धिमता योग्यता एवं व्यवहार कुशलता े प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होगे तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य म्पन्न नहीं करेंगे। ाथ ही माता पिता के प्रति उनके मन में मान लगाव रहेगा। इ प्रकार । और । अपने योग्य एवं बुद्धिमान बच्चों पर गर्व करेंगे तथा ुख शांति एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

ससुराल-सुश्री

। के अपनी ाी से ामान्यतया अच्छे ंबध रहेंगे परन्तु यदा कदा उनके मध्य अनावश्यक मतभेद तथा तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु परस्पर ामंजस्य के द्वारा उनका माधान हो जाएगा तथा इससे विशेष कठिनाई नहीं होगी। ाथ ही । सा से अपनी माता के

समान व्यवहार करेंगी तथा इसी प्रकार उनकी ेवा तथा ुख ुविधा का ध्यान रखेंगी।

लेकिन सुर को प्रसन्न एवं न्तुष्ट करने में । को काफी परेशानी तथा असुविधा का ामना करना पड़ेगा। यदि । धैर्य, गंभीरता तथा ामंजस्य का उनके प्रति प्रदर्शन करेंगी तो उनसे किंचित मात्रा में हानुभूति प्राप्त हो कती है। देवर एवं ननदों े। के बंधों में मधुरता का अभाव रहेगा तथा परस्पर ईर्ष्या तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा। इ प्रकार ामंजस्य एवं बुद्धिमता े ही। ससुराल में अनुकूल वातावरण प्राप्त कर कती है।

ससुराल-श्री

। के अपनी ाी से मधुर बंध रहेंगे तथा आपसी ामंजस्य े इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। ाी को । अपनी माता के मान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी ेवा तथा ुख ुविधा का भी ध्यान रखेंगे। ाथ ही मय मय पर पत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे बंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के ाथ भी । के बंधों में मधुरता रहेगी। ाथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी बंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। ाथ ही ाली एवं ालों े भी बंधों में मित्रता हानुभूति तथा हयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे े औपचारिक बंध रहेंगे।

इ प्रकार सुराल के लोगों का दृष्टिकोण । के प्रति म्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार े प्रसन्न तथा न्तुष्ट रहेंगे।